International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 6, Issue 02, February 2019
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना

सोनिया सांगवान
एमहिन्दी .ए.
एफकालेज .एम.जी., आदमपुर, हिसार
DOI:aarf.ijhrss.55652.11236

सारांश :

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के उन महान कवियों में गिने जाते हैं जो भारतीय संस्कृति के पोषक एवं उद्गाता है। उनके नाटकों में उनकी सांस्कृतिक दृष्टि अभिव्यक्त हुई है। प्रसाद जी की नाट्यकृतियां पौराणिक युग से लेकर हर्षवर्धन युग तक के भारतीय इतिहास के स्वर्णिम एवं गौरवमयी कालखंड पर आधृत हैं तथा इन सभी कृतियों में भारतीय संस्कृति की शान्ति, समृद्धि एवं औदात्य का भास्वर चित्र प्रस्तुत किया है। प्रसाद जी ने अपने नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जागृत की तथा भारत के अतीत 'गौरव का गान कर देश के युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

प्रस्तावना :

प्रसाद जी के नाटक अतीत के पट पर वर्तमान का चित्र प्रस्तुत करने वाले ऐसे नाटक है जिनमें कथानक भले ही इतिहास से लिया हो पर उनमें वर्तमान समस्याओं को ही प्रस्तुत किया गया है। आदर्श नारी पात्रों की परिकल्पना, राष्ट्रीयता की भावना, अतीत गौरव, सामाजिक समस्याओं की अभिव्यक्ति, उदात्त मानवीय मूल्यों की स्थापना, ये उनके नाटकों की मूल विशेषताएं हैं।

मुख्य शब्द :राष्ट्रीयता, चन्द्रगुप्त, गौरव संघर्ष, ऐतिहासिक, संस्कृति, देशभक्ति।

आलेख :

विश्व में राष्ट्रीयता का भाव सर्वप्रथम भारतीय साहित्य में ही दिखाई देता है। अथर्ववेद वैदिक) (साहित्यमें घोषणा की गई है कि भूमि माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ -

''माता भूमिपुत्रोऽहम पृथिव्या। :''[1]

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

भारतीयों में सांस्कृतिक पुनरूत्थान एवं राष्ट्रीय चेतना का स्वर फूंकने वाले साहित्यकार जयशंकर प्रसाद ने पृथ्वी या भूमि को माता मानने के मूल में वस्तुतः देश भक्ति या राष्ट्रीयता का ही भाव दिखाया है जिसका विकास आधुनिक काल के साहित्य में व्यापक रूप से हुआ है।

प्रसिद्ध नाटककार जयशंकर प्रसाद के अधिकांश नाटकों की कथावस्तु तो ऐतिहासिक रही है परन्तु उनकी प्रेरणा राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति रही हैं। प्रत्येक नाटक के पुरूष पात्र उस युग की सांस्कृतिक समस्याओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनके माध्यम से नवीन सांस्कृतिक निर्माण की सूचना दी गई है। उन्होंने इतिहास के उन प्रसंगो को चुनचुन कर उठाया है जो स्वाधीनता आंदोलन के समय देश को प्रेरणा देने में सफल हो - सकते थे। उन्होंने अपने नाटक ''विशारव'' में कहा है ''मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन विस्तृत घटनाओं का दिग्दर्शन कराने की है। जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति को बनाने का बहुत (विशाल) प्रयास किया है''[2] इतिहास के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान की समस्याओं को आवाज देने का प्रयास 'विशारव' नाटकों से ही शुरू हुआ है।

अपने युग में होने वाले साम्प्रदायिक एवं धार्मिक संघर्षों को प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने अपने अनेक नाटकों में बौद्धब्राह्मण संघर्ष को स्थान दिया है।- जनमेजय का नागयज्ञ में नागजाति और आर्यों के संघर्ष को प्रस्तुत किया है। प्रसाद जी ने क्षेत्रीय विभेदों को समाप्त कर राष्ट्रीयता का भाव विकसित करने पर विशेष बल देते हुए चन्द्रगुप्त व स्कंदगुप्त नामक नाटक की रचना की। भारत को एक राष्ट्र के रूप में संगठित कर उसे, शक्तिशाली बनाने के उद्देश्य से भी कई नाटकों की रचना की। स्वतंत्रता संग्राम की परिस्थिति भी प्रसाद जी को उद्देश्य प्रधान व ऐतिहासिक नाटकों की ओर प्रेरित करती है। राष्ट्र के प्रति गौरव भावना राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त है। जब तक राष्ट्र के प्रति गौरव का भाव नहीं होगा तब तक राष्ट्रीयता नहीं आ सकती। प्रसाद जी द्वारा रचित स्कंदगुप्त)1928) में यही गौरव का भाव कई स्थानों पर देखने को मिलता है। यह उस समय की बात है कांग्रेस के भीतर पूर्ण स्वाधीनता होने लगी थी। यह समय भारत को स्वतंत्र कराने की राष्ट्रीय चेतना का दौर था। स्कंदगुप्त वैसे तो ऐतिहासिक नाटक है किंतु इसका उद्देश्य तत्कालीन राष्ट्रीय संघर्ष को ही व्यक्त करना है।

''किसी का हमने छीना नहीं प्रकृति का रहा पालना यही

हमारी जन्मभूमि थी यही, कही से हम आये थे नहीं।''[3]

मानवता के आधार पर इसकी स्थापना हुई है, यह राष्ट्रीयता अंधराष्ट्रवाद नहीं है। भीमवर्मा और देवसेना अपने राज्य को देश पर न्योछावर करना चाहते हैं। समस्त देश के हित के लिए वे स्वार्थों की बलि देने के लिए भी तैयार है देवसेना देश के लिए अपने प्रेम का त्याग करती है। जब उसे प्रतीत होता है कि स्कंदगुप्त प्रेम में अकर्मण्य होने लगा है तो वह प्रेम का त्याग करने में भी संकोच नहीं करती। त्याग का यही भाव नाटक के इस गीत में दिखाई देता है -

''जिए तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष।

न्यौछावर कर दे हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।''[4]

जयशंकर प्रसाद द्वारा 1931 में रचित चन्द्रगुप्त प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक है। जिसकी कथा भारत पर सिकन्दर के आक्रमण तथा मगध में नंदवंश के पराभाव एवं चन्द्रगुप्त मौर्य के राजा बनने की ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ी है। प्रसाद जी ने आधुनिक काल के लोगों को भी राष्ट्र के लिए सेवा त्याग एवं बलिदान पूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा दी है। इतिहास के खंडहर जीवंत पात्रों को सामने लाते हुए उनके माध्यम से देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता का संदेश देना ही इस नाटक का मूल उद्देश्य रहा है। प्रसाद जी के इस नाटक के चाणक्य में गांधी जी का प्रतिबिंब देखा जा सकता है जबकि चंद्रगुप्त व सिंहरण में क्रमशः नेहरू व सुभाष का प्रतिरूप दिखाई देता है। सिंहरण जैसे वीर का उदात चरित्र न जाने कितने नौजवानों को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरक बना। आरम्भिक उन देशद्रोहियों का प्रतीक है जो अंग्रेजों का साथ देते हुए उनका समर्थन करते थे। सेल्यूकश एवं सिकन्दर को उन अंग्रेज शासकों का प्रतीक माना जा सकता है जिनका एकमात्र लक्ष्य जनता का शोषण व अत्याचार करना था। अलका के रूप में हमें एक ऐसी भारतीय नारी के दर्शन होते हैं जो राष्ट्र के गौरव व सम्मान को बनाए रखने के लिए त्याग व बलिदान की अद्वितीय मिशाल पेश करती है। वस्तुतः वह भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाली हजारों नारियों का प्रतीक है। इस नाटक में प्रसाद जी ने ऐसे गीत लिखे जो अतीत के गौरव के साथसाथ देश भक्ति की भावना से भरे हुए हैं।- इस नाटक का प्रसिद्ध गीत जो अलका गाती है और जनता को देश की रक्षा के लिए सन्नद्ध करती है।

''हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती।

स्वयं प्रभा समुज्जवल स्वतंत्रता पुकारती।।

अमत्र्यवीर पुत्र हो दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो।

प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो बढ़े चलो।।''[5]

भारतवासियों की यह विशेषता रही है कि उन्होंने अनजान विदेशियों को भी अपना बंधु समझ कर गले लगाया है। चन्द्रगुप्त नाटक में प्रसाद जी विदेशी नारी कार्नेलिय। को, जो शरीर से तो यूनानी है परन्तु हृदय से भारतीय है। उनको भारतीय संस्कृति और यूनानी संस्कृति का मेल कराने वाली आदर्श नारी के रूप में चित्रित किया है एवं उनसे भारतीय गौरव का गुणगान भी कराया है।

''अरूण यह मधुमेय देश हमारा।

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

सरस तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा

मनोहर, छिपका जीवन हरियाली पर मंगल कुमकुम सारा।''[6]

अपनी अंतिम रचना ध्रुवस्वामिनी में प्रसाद जी ने राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का उत्कृष्ट स्वरूप प्रस्तुत किया है। प्रसाद जी ने ध्रुवस्वामिनी और चन्द्रगुप्त दो ऐसे पात्र प्रस्तुत किये जिनमें भारतीय संस्कृति मूर्तिमान हो उठी है। ध्रुवस्वामिनी के रूप में उन्होंने एक सशक्त नारी पात्र की अवतारणा की है। ध्रुवस्वामिनी आधुनिक नारी का प्रतीक है जो पुरूषों की भोग्या व दासी न रहकर अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत है। उन्होंने यह संदेश दिया है कि नारी को अत्याचार एवं अन्याय का विरोध करना चाहिए तथा आत्मबल जगाकर अपनी रक्षा स्वयं करने का प्रयास करना चाहिए। पुराने समय की दासता को त्यागकर नई चेतना विकसित करनी चाहिए।

चन्द्रगुप्त राष्ट्र का सजग प्रहरी है। वह कुल मर्यादा के लिए अपने प्राणों की परवाह नहीं करते हैं। उसके पराक्रम का पुरुस्कार ही उसे राष्ट्र का कर्णाधार बना देता है। चन्द्रगुप्त की बहन के रूप में मंदाकिनी को कल्पित किया गया है। उसके चरित्र के माध्यम से एक ऐसी भारतीय रमणी की (एक काल्पनिक पात्र) प्रोत है वह जानती हैं कि-परिकल्पना की है जो राष्ट्रीयता की भावना से ओत''वीरता जब भागती है तब उसके पैरों से छल छंद की धूल उड़ती है।''[7]

ध्रुवस्वामिनी में प्रसाद जी ने नैतिक मूल्यों पर अधिक बल दिया है जो, भारतीय संस्कृति का ही एक अंग है। इस नाटक में प्रसाद जी ने सांस्कृतिक मूल्यों के साथ राष्ट्रीयता को भी अभिव्यक्ति दी है। अपने नाटकों में प्रसाद जी ने अनेक संस्कृतियों का संघर्ष दिखा कर मूल भारतीय सांस्कृतिक धारणा को अक्षुण्य बनाये रख कर राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना को विशेष बल प्रदान किया है।

निष्कर्ष :

इस प्रकार कहा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद जी ने अपने नाटकों में विभिन्न देशभक्त एवं राष्ट्रप्रेमी पात्रों की योजना करके एक ओर तो अपनी व्यापक राष्ट्रीयता का परिचय दिया है वही दूसरी तरफ आधुनिक भारत के लोगों को भी राष्ट्र प्रेम व देशभक्ति के लिए प्रेरित किया है। प्रसाद जी ने अपने नाटकों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना को विशेष बल प्रदान किया है। इस कारण प्रसाद जी के नाटकों को भारत की विभिन्न युगीन संस्कृति के कोष ग्रंथ कहा जा सकता है। नाटक में एक तरफ भारत के स्वर्णिम अतीत की झांकी है तो वही दूसरी तरफ वर्तमान राष्ट्रीय समस्याओं की ओर इशारा किया है व उनकी समस्याओं का समाधान भी बताया है। आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी उनके नाटकों के संबंध में कहते हैं -''प्रसाद के नाटकों का शरीर जहां पूर्ण साहित्यिक है वहां उनका मन अनिवार्यतः ऐतिहासिक है और उनकी आत्मा शुद्ध सांस्कृतिक।''[8]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अथर्ववेद
2. चन्द्रगुप्त नाटक, जयशंकर प्रसाद, जनभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. स्कन्दगुप्त नाटक, जयशंकर प्रसाद, जनभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. स्कन्दगुप्त नाटक, जयशंकर प्रसाद, जनभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. चन्द्रगुप्त नाटक, जयशंकर प्रसाद, जनभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. चन्द्रगुप्त नाटक, जयशंकर प्रसाद, जनभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. ध्रुवस्वामिनी नाटक, जयशंकर प्रसाद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. प्रतियोगिता साहित्य सीरीज, द्वितीय पत्र, डाअशोक तिवारी ., साहित्य भवन, आगरा।